ijamrsd.com JAMRSD ISSN: 2583-6404
Journal of Advanced Multidisciplinary Research Studies and Development
Peer Reviewed Referred Journal Bi-monthly Open Access

मानव से मशीन तक: कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में हिंदी साहित्य की भूमिका

डॉ. विजय एकनाथ सोनजे
Associate Professor, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, धनाजी नाना महाविद्यालय, फैजपुर,
तहा. यावल, जि. जलगांव, महाराष्ट्र -425503.
Email: shinesonje88@gmail.com

सारांश:
कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तीव्र विकास ने मानव सभ्यता के ज्ञान-संरचना, संप्रेषण प्रणाली और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के स्वरूप को मूलतः परिवर्तित कर दिया है। आज मशीनें केवल गणनात्मक कार्यों तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि भाषा-निर्माण, रचनात्मक लेखन, अनुवाद और विचार-प्रस्तुति जैसे जटिल कार्य भी करने लगी हैं। इस परिवर्तन ने साहित्य की पारंपरिक अवधारणा को चुनौती दी है, क्योंकि साहित्य सदैव मानव अनुभव, संवेदना और चेतना की अभिव्यक्ति माना गया है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस संक्रमणकाल में हिंदी साहित्य की भूमिका क्या है और वह किस प्रकार मानवीय अस्मिता, नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक चेतना को संरक्षित रख सकता है। यह अध्ययन इस प्रतिपाद्य पर आधारित है कि यद्यपि AI भाषा-सृजन को तकनीकी दक्षता प्रदान करता है, तथापि वह मानवीय अनुभूति और आत्मानुभव का विकल्प नहीं बन सकता। अतः हिंदी साहित्य को तकनीकी प्रगति के साथ समन्वय स्थापित करते हुए मानवता की मूल संवेदना को केंद्र में रखना होगा।
मुख्य शब्द: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, हिंदी साहित्य, मानव सभ्यता, तीव्र विकास, मानव, मशीन.

► *Corresponding Author: डॉ. विजय एकनाथ सोनजे*

- **प्रस्तावना-**

मानव सभ्यता का विकास तकनीकी परिवर्तनों के साथ निरंतर आगे बढ़ता रहा है। मुद्रण यंत्र के आविष्कार ने ज्ञान के लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया आरंभ की, औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन और सामाजिक संरचनाओं को पुनर्गठित किया, और डिजिटल क्रांति ने सूचना को वैश्विक गति प्रदान की। वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी क्रांतिकारी शक्ति के रूप में उभरी है जिसने मानव और मशीन के संबंधों की सीमाओं को पुनर्परिभाषित कर दिया है। अब मशीनें भाषा को समझती हैं, संदर्भ ग्रहण करती हैं और स्वतंत्र रूप से पाठ-निर्माण करने लगी हैं। यह स्थिति साहित्य की पारंपरिक धारणा को चुनौती देती है, क्योंकि साहित्य को सदैव मानव की चेतना और अनुभूति का परिणाम माना गया है। हिंदी साहित्य, जो भारतीय समाज की सांस्कृतिक स्मृति, ऐतिहासिक चेतना और भावबोध का प्रतिनिधि है, इस परिवर्तनशील युग में नई चुनौतियों और संभावनाओं का सामना कर रहा है। प्रस्तुत शोध इसी जटिल अंतर्संबंध का आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

विषय प्रवेश:

- **सृजनात्मकता और मानवीय संवेदना-**

साहित्य की मूल आत्मा सृजनात्मकता है, और सृजनात्मकता का संबंध केवल शब्दों के संयोजन से नहीं, बल्कि अनुभव और अनुभूति से होता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता विशाल डेटा-संग्रहों के आधार पर भाषा का पुनर्संयोजन करती है, परंतु उसके पास जीवनानुभव की प्रत्यक्ष चेतना नहीं होती। मानव-रचित साहित्य जीवन के संघर्ष, प्रेम, पीड़ा, करुणा और नैतिक द्वंद्व का साक्षात् अनुभव प्रस्तुत करता है। मशीन इन भावों की संरचना तो कर सकती है, किंतु उनकी आत्मीयता और आंतरिक स्पंदन को अनुभव नहीं कर सकती। साहित्य का कार्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि भाव-जागरण और

संवेदना-संवर्धन करना है। इसी कारण साहित्य समाज में परिवर्तन का माध्यम बनता है और मानवीय चेतना को दिशा प्रदान करता है।

प्रेमचंद का कथन है— "साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं, उसका मार्गदर्शक भी है।"[1] यह मार्गदर्शन केवल तथ्यों से संभव नहीं, बल्कि संवेदनात्मक प्रतिबद्धता से संभव होता है। यदि साहित्य से अनुभूति का तत्व हट जाए, तो वह मात्र भाषिक संरचना बनकर रह जाएगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित पाठ सामाजिक संदर्भों का अनुकरण कर सकता है, किंतु वह सामाजिक परिवर्तन की नैतिक प्रतिबद्धता नहीं निभा सकता।

महादेवी वर्मा ने लिखा— "साहित्य मानव की करुणा का इतिहास है।"[2]करुणा का इतिहास अनुभवों की निरंतरता से निर्मित होता है, न कि सांख्यिकीय संभावनाओं से। हिंदी साहित्य का दायित्व है कि वह तकनीकी युग में भी मानवीय करुणा, सहानुभूति और आत्मीयता को केंद्र में रखे। यही उसकी विशिष्टता और सामाजिक प्रासंगिकता है।

- **भाषा-प्रौद्योगिकी और हिंदी का भविष्य-**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा-प्रौद्योगिकी ने हिंदी के प्रसार को अभूतपूर्व गति प्रदान की है। अनुवाद-सॉफ्टवेयर, वाक्-पहचान प्रणाली और स्वचालित लेखन उपकरणों ने हिंदी को वैश्विक मंच पर पहुँचाया है। इससे साहित्य का डिजिटलीकरण संभव हुआ है और शोध-कार्य में सुविधा प्राप्त हुई है। डिजिटल माध्यमों के कारण हिंदी साहित्य के दुर्लभ ग्रंथ संरक्षित हो रहे हैं और नए पाठकों तक पहुँच बना रहे हैं।

रामविलास शर्मा का मत था— "भाषा संस्कृति की आत्मा है।"[3]यदि भाषा को केवल तकनीकी सुविधा का माध्यम बना दिया जाए, तो उसकी सांस्कृतिक गहराई क्षीण हो सकती है। अतः हिंदी साहित्य को यह सुनिश्चित करना होगा कि AI का प्रयोग भाषा की आत्मा और परंपरा को सुरक्षित रखते हुए किया जाए।

डिजिटल मानविकी के माध्यम से साहित्यिक पाठों का सांख्यिकीय विश्लेषण संभव है, किंतु साहित्य की व्याख्या केवल आँकड़ों के आधार पर नहीं की जा सकती। साहित्य की आत्मा को समझने के लिए मानवीय दृष्टि और आलोचनात्मक विवेक आवश्यक है। इसलिए हिंदी साहित्य का भविष्य तकनीक और संवेदना के संतुलन पर निर्भर करेगा।

- **नैतिकता, मूल्यबोध और मानवता का प्रश्न-**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संरचना मूलतः एल्गोरिद्मिक तर्क और डेटा-आधारित निष्कर्षों पर आधारित होती है, इसलिए उसमें स्वायत्त नैतिक चेतना का अभाव होता है। वह निर्णय तो ले सकती है, परंतु उन निर्णयों के नैतिक परिणामों का अनुभव नहीं कर सकती। साहित्य का कार्य केवल यथार्थ का चित्रण करना नहीं, बल्कि नैतिक प्रश्नों को उठाना और समाज को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करना भी है। हिंदी साहित्य की परंपरा में मानवतावाद, करुणा, समानता और न्याय जैसे मूल्यों को केंद्रीय स्थान प्राप्त है। यदि समाज मशीन-निर्भर निर्णय-प्रणालियों की ओर अग्रसर होता है, तो नैतिक उत्तरदायित्व का प्रश्न जटिल हो जाएगा। ऐसे समय में साहित्य मनुष्य को उसकी संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का बोध कराता है। इसलिए AI युग में हिंदी साहित्य का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है।

हजारीप्रसाद द्विवेदी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था— "साहित्य मनुष्य को मनुष्य बनाता है।"[4]यह कथन आज के तकनीकी युग में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है, क्योंकि यदि मनुष्य अपनी संवेदनशीलता खो दे तो उसकी पहचान केवल जैविक अस्तित्व तक सीमित रह जाएगी। साहित्य मनुष्य को आत्मचेतना प्रदान करता है और उसे नैतिक विवेक का अभ्यास कराता है। मशीन-निर्मित पाठ में नैतिक आग्रह का आभास तो हो सकता है, परंतु वह आंतरिक अनुभव से उपजा हुआ नहीं होता।

महात्मा गांधी का विचार था— "नैतिकता के बिना ज्ञान विनाशकारी हो सकता है।"[5]यदि इस कथन को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संदर्भ में देखें, तो स्पष्ट होता है कि तकनीकी ज्ञान को मानवीय नैतिकता से संतुलित करना आवश्यक है। हिंदी साहित्य इस संतुलन का माध्यम बन सकता है, क्योंकि वह समाज में मूल्यबोध और संवेदनशीलता का संवाहक है।

- **डिजिटल संस्कृति और साहित्यिक विमर्श-**

डिजिटल युग ने पठन-पद्धति और लेखन-शैली दोनों को गहरे रूप में प्रभावित किया है। आज पाठक त्वरित सूचना, संक्षिप्त अभिव्यक्ति और दृश्य-प्रधान सामग्री की ओर अधिक आकर्षित होते हैं। इससे साहित्य की गंभीरता और चिंतनशीलता पर प्रभाव पड़ने की आशंका है। हिंदी साहित्य, जिसकी परंपरा गहन दार्शनिक और सामाजिक विमर्श की रही है, इस परिवर्तन के बीच अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने की चुनौती का सामना कर रहा है। डिजिटल माध्यमों

ने साहित्य को व्यापक पाठक-वर्ग तक पहुँचाया है, परंतु साथ ही लोकप्रियता और बाज़ारवाद का दबाव भी बढ़ाया है। ऐसे में साहित्य को मनोरंजन और विचार के संतुलन को साधना होगा।

मार्शल मैकलुहान का प्रसिद्ध कथन— "The medium is the message"[6] यह संकेत करता है कि माध्यम स्वयं संदेश की प्रकृति को प्रभावित करता है। डिजिटल माध्यम साहित्य की प्रस्तुति, शैली और संरचना को परिवर्तित कर रहा है। हिंदी साहित्य को इस परिवर्तन को समझते हुए अपनी आलोचनात्मक दृष्टि को बनाए रखना होगा, ताकि वह केवल डिजिटल प्रवृत्तियों का अनुकरण न करे, बल्कि उनका विवेकपूर्ण मूल्यांकन भी करे।

नामवर सिंह का मत था— "साहित्य की शक्ति उसकी आलोचनात्मक चेतना में निहित है।"[7] यह आलोचनात्मक चेतना ही साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाती है। डिजिटल संस्कृति के इस दौर में हिंदी साहित्य को अपने वैचारिक गहनता और चिंतनशील परंपरा को सुरक्षित रखना होगा, ताकि वह समाज को केवल तात्कालिक सूचना नहीं, बल्कि स्थायी मूल्य भी प्रदान कर सके।

- **सहअस्तित्व और भविष्य की संभावनाएँ-**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को पूर्णतः विरोधी या संकट के रूप में देखना उचित नहीं है। वह शोध, संपादन, अनुवाद, पाठ-संरक्षण और अभिलेखीकरण जैसे कार्यों में अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकती है। हिंदी साहित्य के प्राचीन और दुर्लभ ग्रंथों के डिजिटलीकरण में AI की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। इसके माध्यम से साहित्यिक पाठों का विश्लेषण, प्रवृत्तियों का अध्ययन और तुलनात्मक शोध अधिक सुव्यवस्थित रूप में संभव है। अतः तकनीक को सहयोगी के रूप में स्वीकार करना समय की मांग है।

एन. कैथरीनहेलेस ने लिखा है— "Humans and intelligent machines are evolving together."[8]यह सह-विकास इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि भविष्य में मानव और मशीन का संबंध प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि सहयोग का होगा। हिंदी साहित्य को इस सहअस्तित्व को सकारात्मक दृष्टि से ग्रहण करना होगा और तकनीक को रचनात्मक उपकरण के रूप में उपयोग करना होगा।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर का कथन है— "मनुष्य की सृजनशीलता उसकी आत्मा की अभिव्यक्ति है।"[9]यह अभिव्यक्ति किसी भी तकनीक से परे है। अतः भविष्य का साहित्य संभवतः मानव-मशीन सहयोग से निर्मित हो, किंतु उसकी आत्मा और दिशा मानव चेतना से ही निर्धारित होगी। हिंदी साहित्य का भविष्य इसी संतुलित सहअस्तित्व में निहित है, जहाँ तकनीकी प्रगति और मानवीय संवेदना परस्पर पूरक बनकर विकसित हों।

- **निष्कर्ष-**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तीव्र विकास ने मानव जीवन की संरचना, ज्ञान-प्रणाली और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के स्वरूप को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। इस परिवर्तन ने साहित्य की पारंपरिक अवधारणा को चुनौती दी है, क्योंकि अब भाषा-सृजन का कार्य केवल मानव तक सीमित नहीं रहा। तथापि गहन विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि साहित्य मात्र शब्द-संरचना नहीं, बल्कि मानवीय अनुभव, संवेदना, नैतिक चेतना और सांस्कृतिक स्मृति का जीवंत दस्तावेज़ है। मशीनें भाषा का अनुकरण कर सकती हैं, परंतु वे जीवन का अनुभव नहीं कर सकतीं। हिंदी साहित्य की शक्ति उसकी मानवीयता, करुणा और आलोचनात्मक दृष्टि में निहित है।

अतः कृत्रिम बुद्धिमत्ता को विरोधी नहीं, बल्कि सहयोगी उपकरण के रूप में स्वीकार करते हुए साहित्य को अपनी मूल आत्मा को सुरक्षित रखना होगा। भविष्य का साहित्य संभवतः मानव और मशीन के सहअस्तित्व पर आधारित होगा, परंतु उसकी दिशा, मूल्यबोध और संवेदनात्मक गहराई का निर्धारण मानव चेतना ही करेगी। इस प्रकार हिंदी साहित्य तकनीकी युग में भी मानवीय अस्मिता और नैतिक संतुलन का प्रमुख आधार बना रहेगा।

- **संदर्भ सूची:**

1. साहित्य का उद्देश्य- प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, नई दिल्ली-(2003).
2. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध- महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-(1983).
3. भाषा और समाज-रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली (2001).
4. साहित्य का मर्म- हजारीप्रसाद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली (1998).
5. Hind Swaraj- M. K. Gandhi,Navajivan Publishing House, Ahmedabad (2009).

6. Understanding Media- The Extensions of Man ,Marshall McLuhan, McGraw-Hill, New York -(1964).
7. कविता के नए प्रतिमान- नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-(1982).
8. How We Think- Digital Media and Contemporary Techno genesis, N. Katherine Hayles- University of Chicago Press, Chicago-(2012).
9. Creative Unity- Rabindranath Tagore ,Rupa Publications, New Delhi (2005).